48. काल्पनिक रेखाएं जो समान तापमान प्रदर्शित करती है, कहलाती है -

1. आइसोक्रोम 3. आइसोथर्म
2. आइसोटोप 4. आइसोफैन

49. काल्पनिक रेखाएं जो समान वायुगति प्रदर्शित करती है, कहलाती है -

1. आइसोटोप 3. आइसोथर्म
2. आइसोफैन 4. आइसोटेक

50. आकाश में विद्युत चमकने के दौरान कौन-सी गैस बनती है ?

1. कार्बन डाईऑक्साइड
2. ऑक्सीजन
3. नाइट्रोजन पराऑक्साइड
4. सल्फर डाईऑक्साइड

संपर्क करें :
श्री पंकज गर्ग
रा.ज.सं., रूड़की

उत्तरमाला

प्रश्न	उत्तर	प्रश्न	उत्तर
1	3	26	1
2	2	27	1
3	2	28	1
4	4	29	4
5	3	30	4
6	2	31	4
7	4	32	4
8	2	33	1
9	2	34	2
10	3	35	2
11	2	36	3
12	3	37	3
13	1	38	2
14	1	39	3
15	3	40	2
16	3	41	4
17	1	42	3
18	1	43	3
19	1	44	3
20	1	45	2
21	2	46	1
22	2	47	4
23	2	48	3
24	1	49	4
25	1	50	3

समझाती रही नानी पानी की कहानी

ज्यादातर परिवारों में पवित्र गंगाजल को अनमोल बताकर पानी की फिजूलखर्ची नहीं करने का संस्कार देने वाले हमारे बुजुर्ग ही होते हैं। पर हम कहां समझ पाए थे गंगाजल की ही तरह पानी का भी मितव्ययिता से उपयोग करने का यह संदेश।

योगेश चन्द्र जोशी

कोई गाय मौत के लिए छटपटा रही हो या मोहल्ले में किसी के यहां अंतिम सांसें गिन रहे किसी परिजन को गीता का अठारहवां अध्याय सुनाने के हालात बन रहे हों, तो उस समय उनके परिवार का कोई सदस्य कटोरी या भगोनी लेकर चला आता था। वह दरवाजा खटखटाने के साथ ही कौशल्या नानी कहकर आवाज लगाता और सारे हालात को बताकर गंगाजल और तुलसी के पत्ते देने का अनुरोध करता। नानी बड़बड़ाती हुई पूजाघर में जाती, चंदन-कुमकुम के छीटों से रंग-बिरंगी हुई कांच की बोतल, चम्मच, गमले के आस-पास गिरे तुलसी के पत्ते लेकर उतरती और कटोरी में दो चम्मच गंगाजल डालकर तुलसी के पत्ते थमाकर दरवाजा बंद कर लेती।

कटोरी में रखा गंगाजल वे अपने ही हाथों से गाय के मुंह में डालते हुए हमें सीख देती थी कि तुम्हें गंगाजल की कीमत का पता नहीं है, नीचे गिरा दोगे। उसके उपरांत गाय की परिक्रमा लगाती थी और साथ ही प्रार्थना भी करती थी कि हे दीनानाथ, मत तड़पाओ इस जीव को, अपने पास बुला लो। तड़पती गाय के लिए दयामृत्यु की प्रार्थना स्वीकारे जाने के बदले नानी दो या पांच ग्यारस के व्रत कबूलना नहीं भूलती थी। हमें आश्चर्य होता था कि दीनानाथ प्रार्थना तत्काल कैसे स्वीकार कर लेते हैं? हम भी गाय की आत्मा की शांति के लिए निर्जला एकादशी का व्रत उत्साह से करते थे। इस एकादशी पर पानी वर्जित होने से आम खूब खाने को मिलते थे। घर पर जब कोई रात-बिरात गंगाजल मांगने आता था तो नानी की खटर-पटर से कई बार हमारी आंखें खुल जाती थी। दो चम्मच गंगाजल देने के उनके नियम में बदलाव हमें कभी नजर नहीं आया। हम कहते थे कि गंगाजल देने में भी मितव्ययिता कैसी? तो उनके उपदेश शुरू हो जाते थे कि तुम्हें तो पानी की ही कद्र नहीं पता, तो गंगाजल का मोल क्या समझोगे? तुम्हें कंजूसी तो नजर आई, पर यह थोड़ी पता है कि 20-25 साल पहले कितने संकट उठाकर लाई हूं हरिद्वार से।

ज्यादातर परिवारों में गंगाजल को अनमोल बताकर पानी की फिजूलखर्ची नहीं करने का संस्कार देने वाले हमारे बुजुर्ग ही होते हैं। पर हम कहां समझ पाए थे गंगाजल की ही तरह पानी का भी मितव्ययिता से उपयोग करने का यह संदेश। दशकों पूर्व तब हर घर में निजी नल कनेक्शन भी नहीं होते थे। पूरे प्रेशर के साथ सरकारी नल सुबह-शाम आधे घंटे तो चलते ही थे। हम भी स्टील का डिब्बा या पीतल का घड़ा लेकर पहुंच जाते थे। नल से घर तक की दूरी तय करने में दो-तीन जगह तो सुस्ताते, उसके बाद भी घर तक पहुंचते-पहुंचते बर्तन में पानी आधा ही रह जाता था। पूरे रास्ते पानी गिरने के कारण गीली हुई मिट्टी की मोटी लकीर बन जाती थी। पानी का मोल ना समझने को लेकर फिर से नानी के उपदेश शुरू हो जाया करते थे।

पूरे मोहल्ले में जब बच्चे अपनी साइकिल, खिलौने देखकर फूले नहीं समाते थे, तब हम अपनी छोटी बाल्टियों पर इतराते थे। मोहल्ले के बड़े-बूढ़े जब तीर्थयात्रा से आते थे तो गंगाजल, अमृत, आब जमजम व खजूर प्रसाद के रूप में घर-घर बांटे जाते थे। नजदीकी रिश्तेदारों को तांबे के छोटे-छोटे पात्रों में लाया गया गंगाजल दिया जाता था। जिन घरों में ये पात्र दिए जाते थे, वे तब तक इन्हें पूजाघर में रखते थे, जब तक कि शुभ अवसर पर उद्यापन न किया जाए। अभी भी विवाह पत्रिकाओं में गंगापूजन का उल्लेख होता है। गंगापूजन के लिए जब नदी पर जल भरने महिलाएं जाती हैं तो गंदगी का नाला देखकर उनका मन दुःखी होता है। ज्यादातर परिवार तो साथ में कुएं से मिट्टी के कलश भरकर उनमें थोड़ा-थोड़ा गंगाजल इस आस्था के साथ डालते हैं कि सारे कलशों का पानी गंगाजल हो गया है।

अक्सर यह सोचकर आश्चर्य होता है कि गंगाजल, अमृत, आबेजमजम के प्रति इतनी आस्था के बाद भी हम पानी का मोल क्यों नहीं समझ पा रहे हैं? हम स्वयं तो पानी का अपव्यय कर रहे हैं और इसे बचाने की अपेक्षा पड़ोसी से ही क्यों करते है?

संपर्क करें :
योगेश चन्द्र जोशी
रूड़की